Sociology Study: Causes of Poverty (निर्धनता : कारण)

Date: February 21, 2026

Author: Dr. Sangeeta Prakash

परिचय (Introduction)

निर्धनता वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं—जैसे भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य—को पर्याप्त रूप से पूरा नहीं कर पाता। भारत में निर्धनता के कई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा जनसंख्यात्मक कारण हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है।

I. आर्थिक कारण (Economic Causes)

आर्थिक ढांचा और संसाधनों का वितरण निर्धनता के निर्धारण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1. खेती की पिछड़ी दशा

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की बड़ी जनसंख्या खेती पर निर्भर है। लेकिन पारंपरिक खेती, आधुनिक तकनीक की कमी, सिंचाई सुविधाओं का अभाव तथा छोटे-छोटे खेत होने के कारण कृषि उत्पादन कम होता है। इससे किसानों की आय कम रहती है और निर्धनता बढ़ती है।

2. बुनियादी उद्योगों की पिछड़ी स्थिति

देश में कई आवश्यक उद्योग पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो पाए हैं। भारी उद्योग, मशीन निर्माण तथा अन्य उत्पादन क्षेत्रों में कमी होने से रोजगार के अवसर कम बनते हैं, जिससे गरीबी बढ़ती है।

3. पूँजी की कमी

भारत में पूँजी संचय कम है। लोगों की आय कम होने के कारण बचत भी कम होती है। उद्योग और व्यापार के विस्तार के लिए पर्याप्त निवेश नहीं हो पाता, जिससे आर्थिक विकास धीमा रहता है और निर्धनता बनी रहती है।

4. परिवहन एवं संचार के साधनों की कमी

अच्छे परिवहन और संचार की व्यवस्था आर्थिक विकास के लिए आवश्यक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी कमी के कारण किसान अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं पा पाते और व्यापार का विकास भी सीमित रह जाता है।

5. श्रमिकों की कार्यक्षमता की कमी

शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुविधाओं और पोषण की कमी के कारण कई श्रमिकों की कार्यक्षमता कम होती है। परिणामस्वरूप उत्पादन घटता है और आय कम रहती है, जिससे गरीबी बढ़ती है।

6. बैंकिंग एवं साख सुविधाओं की कमी

किसानों और छोटे व्यापारियों को पर्याप्त ऋण और बैंकिंग सुविधाएँ नहीं मिल पातीं। इससे वे नए कार्य शुरू करने

या अपने व्यवसाय को बढ़ाने में असमर्थ रहते हैं, जो निर्धनता का कारण बनता है।

7. प्राकृतिक संसाधनों का अपर्याप्त उपयोग

भारत में जल, भूमि, खनिज और वन जैसे प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं है, लेकिन इनका उचित उपयोग न होने से आर्थिक विकास की गति धीमी रहती है और गरीबी बनी रहती है।

II. राजनीतिक कारण (Political Causes)

1. राजनीतिक भ्रष्टाचार

राजनीतिक भ्रष्टाचार के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ सही लोगों तक नहीं पहुँच पाता। सार्वजनिक धन का दुरुपयोग होता है, जिससे विकास कार्य प्रभावित होते हैं और गरीबी बढ़ती है।

2. राजनीतिक अस्थिरता एवं महँगे चुनाव

सरकारों के बार-बार बदलने और चुनावों पर अत्यधिक खर्च होने से विकास कार्यों में बाधा आती है। इससे आर्थिक प्रगति धीमी हो जाती है और निर्धनता बनी रहती है।

3. राजनीतिक घुसपैठ

कभी-कभी बाहरी लोगों का अवैध प्रवेश भी आर्थिक संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है। इससे रोजगार और संसाधनों का बँटवारा प्रभावित होता है और गरीबी की समस्या बढ़ सकती है।

III. जनसंख्यात्मक कारण (Demographic Factors)

अधिक जनसंख्या को भारत की निर्धनता का एक प्रमुख कारण माना जाता है। इसके प्रभाव निम्नलिखित हैं:

1. रोजगार की समस्या

जनसंख्या तेजी से बढ़ने के कारण हर वर्ष बड़ी संख्या में लोग श्रम बाजार में आते हैं, लेकिन सभी को रोजगार नहीं मिल पाता। इससे बेरोजगारी और गरीबी बढ़ती है।

2. श्रमिकों की अधिक आपूर्ति

जब श्रमिकों की संख्या अधिक होती है, तो मजदूरी कम हो जाती है। कम मजदूरी के कारण लोगों की आय घटती है और गरीबी बढ़ती है।

3. प्रति व्यक्ति आय में कमी

जनसंख्या अधिक होने से राष्ट्रीय आय का वितरण अधिक लोगों में होता है, जिससे प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। इससे लोगों का जीवन स्तर गिरता है।

4. आर्थिक विकास में बाधा

तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण सरकार को पहले लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने पर अधिक खर्च करना पड़ता है, जिससे विकास कार्यों की गति धीमी पड़ जाती है।

5. भूमि पर बढ़ता दबाव

जनसंख्या वृद्धि से खेती योग्य भूमि पर दबाव बढ़ता है। खेत छोटे-छोटे भागों में बँट जाते हैं, जिससे कृषि उत्पादन कम होता है और ग्रामीण निर्धनता बढ़ती है।

IV. निष्कर्ष **(Conclusion)**

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि भारत में निर्धनता के पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं—जैसे आर्थिक पिछड़ापन, राजनीतिक समस्याएँ और तेजी से बढ़ती जनसंख्या। इन समस्याओं के समाधान के लिए कृषि और उद्योग का विकास, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण तथा जनसंख्या नियंत्रण जैसे उपाय आवश्यक हैं।